प्रकाशकीय—

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्यश्री १००८ श्री नानालाल जी म सा के मालव-प्रदेश के गाव-गाव मे विहार के समय वहाँ के निवासियों मे हजारों बलाई बन्धुओं ने पूज्य आचार्य श्री जी के सदुपदेश और अपनी अतरग की प्रेरणा से वीतराग-प्ररूपित विश्व-कल्याणकारी जैनधर्म को अगीकार कर अपने को "धर्मपाल-जैन" कहलाने मे गौरव का अनुभव किया ।

यद्यपि आचार्य श्री जी म सा के उपदेशों को सुनने से इन नये धर्मपाल-जैन-बन्धुओं के आत्म-विश्वास एव जीवन को सन्मार्गगामी बनाने के संस्कारों को बल मिला था, लेकिन साथ ही उनमें यह जिज्ञासा भी पैदा हुई कि हमें जैनधर्म के सिद्धान्तो व आचारों का विशेष ज्ञान प्राप्त हो । उनकी इस जिज्ञासा की पूर्ति और [illegible] विशेष जानकारी देने के लिए ही "धर्मपाल-बोधमाला" के प्रथम भाग का प्रकाशन किया जा रहा है ।

इस बोधमाला की सामग्री चयन मे धर्मपाल जैन बन्धुओं की रुचि, बौद्धिक-स्तर और क्रम का ध्यान रखते हुए पाठ्य-सामग्री को सुरुचिकर बनाने के लिए प्रश्नोत्तरात्मक शैली का उपयोग किया गया है । भाषा का क्रम भी इस पुस्तक मे रखा गया है कि हमारे धर्मपाल जैन बन्धुओं को थोड़े से समय मे जैनधर्म-विषयक विशेष जानकारी प्राप्त हो सकेगी ।

[illegible] जी [illegible] ने बोध-माला की [illegible] जैनधर्म के सिद्धान्तों की जानकारी देने का जो प्रयत्न

परिचय

श्रमण-संस्कृति के रक्षक, निर्ग्रन्थ-मर्यादा के पालक, अहिंसा, संयम से समन्वित शान्त-क्रान्ति के जन्म-दाता, चरित्र-चूडामणि, शास्त्र-विशारद, त्याग, तप और सरलता की साकार मूर्ति, स्वर्गीय श्रीमज्जैनाचार्य पूज्यप्रवर श्री श्री १००८ श्री गणेशलालजी महाराज सा. के पट्टधर शिष्य, महातेजस्वी, आध्यात्मिक तत्ववेत्ता, शान्त, दान्त, गंभीर, व्याख्यान-वाचस्पति, बालब्रह्मचारी, आचार्य-श्रेष्ठ पूज्य श्री श्री १००८ श्री नानालालजी महाराज साहब के सुबोध-गम्य सदुपदेशों द्वारा जिन समझदार भाइयों ने मद्य-शराब, मांस-भक्षण, जुआ, शिकार आदि कुव्यसनों और उनके पापों का त्याग कर जैनधर्म स्वीकार किया है और "बलाई" शब्द को दूर कर "धर्मपाल-जैन" बने हैं, विशेषतः उन्हीं के सम्यक्-ज्ञान-प्रचारार्थ "धर्मपाल-बोधमाला" पहला भाग नामक यह एक छोटी-सी पुस्तक पाठकों के हाथों में है।

पाठकों की सीखने में रुचि पैदा हो, इस दृष्टि से प्रश्नोत्तर शैली में, सरल भाषा में पुस्तक की रचना की गई है। आशा है कि पाठक-गण जब भी समय मिले तब अथवा कुछ समय निकाल कर इस पुस्तक से अवश्य लाभ उठायेंगे।

निवेदक—

लालचन्द मुणोत—ब्यावर

विषय सूची

विशेप-भाग

सामायिक-सूत्र विधि-सहित

पेमचन्द—इन "जिनेन्द्र अथवा अरिहंत" के और गुण क्या-क्या है ?

रामलाल—ये सर्व शक्ति मान ईश्वर हैं। ये क्रोध से, मान से, माया से और लोभ से बिल्कुल ही रहित होते है। ये तीनो कालो को—"भूत, भविष्य और वर्तमान" की बातो को जानने वाले होते है, इसलिये इन्हे "केवली अथवा सर्वज्ञ" भी कहते है। इनसे कोई भी बात छिपी हुई नही होती है इसलिये ये "सर्व-दर्शी" भी कहलाते है। "मोह, ममता और द्वेष" से ये रहित होते है, इसलिये ये "वीतराग" भी कहे जाते है ?

पेमचन्द—क्या इन्ही महापुरुषो का अथवा उत्तम पुरुषो का फरमाया हुआ धर्म ही "जैन-धर्म" है ?

रामलाल—हां ! भाई पेमचन्द ! इन्ही अनेक गुणो वाले परम पिता परमात्मा "जिनेन्द्र-देव" का फरमाया हुआ धर्म ही जैन-धर्म कहलाता है।

पेमचन्द—जैन-धर्म के क्या दूसरे नाम भी है ?

रामलाल—भाई हां ! जैन-धर्म को वीतराग धर्म भी कहते है। इसे 'दया-धर्म, अथवा केवली धर्म" भी कहते है।

पेमचन्द—क्या किसी भी जाति का अथवा किसी भी देश का रहने वाला कोई भी पुरुष अथवा स्त्री बिना भेद भाव के "जैन-धर्म" को पालता हुआ जिनेन्द्र भगवान की भक्ति—आराधना कर सकता है ? और दया-धर्म पर चलता हुआ [illegible] कर सकता है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! प्रात काल उठते ही एक सौ आठ वार कम से कम नीचे लिखे महा-मत्र का जाप करना चाहिये ।

"नमो अरिहताणं, नमो सिद्धाण,
नमो आयरियाण, नमो उवज्झायाण,
नमो लोए सव्वसाहूणं ।
एसो पच नमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो ।
मगलाण च सव्वेसिं, पढमं हवइ मगल ॥

पेमचन्द—इसके जाप मे क्या-क्या फायदे है ?

रामलाल—जो आदमी इस महामत्र पर पूरा विश्वास करके इसका जाप करता है, वह सभी प्रकार के सकटो से छूटकर सुखी हो जाता है; उसके सब पाप दूर हो जाते हैं और उसके मन को बडी शाति मिलती है ।

पेमचन्द—इसके जाप की विधि याने तरीका क्या है ?

रामलाल—जहाँ कही अपन रह रहे हो, वहाँ पर एक बाजू मे शान्ति के साथ बैठकर आँखें मीच कर, मुंह के आगे उतरासन (कपडा) लगाकर अथवा मुंहपति बाधकर माला हाथ मे लेकर अथवा बिना माला के भी मन ही मन मे इस "महा-मत्र" को बोलना ही "जाप करना" कहलाता है ।

पेमचन्द—क्या प्रत्येक जैनी के लिये इसका रोज-बरोज जाप करना जरूरी है ?

रामलाल—हाँ भाई पेमचन्द ! जैनी के लिये रोज सुबह, शाम,

रामलाल—भाई पेमचन्द ! यों तो इस महा-मंत्र का अर्थ वहुत ही गहन और विशाल होता है परन्तु थोडे मे इसका अर्थ इस प्रकार है —

(१) णमो अरिहताण—श्री अरिहत देव को हमारा नमस्कार हो।

(२) णमो सिद्धाणं—श्री सिद्ध भगवान को हमारा नमस्कार हो।

(३) णमो आयरियाणं—श्री आचार्य महाराज को हमारा नमस्कार हो।

(४) णमो उवज्झायाण—श्री उपाध्याय महाराज को हमारा नमस्कार हो।

(५) णमो लोए सव्व साहूण—इस ससार मे विराजमान सच्चे निर्ग्रन्थ साधु-मुनिराजो को हमारा नमस्कार हो।

(६) एसो पञ्च णमुक्कारो—ऐसा पाँचो पदो को किया जाने वाला यह नमस्कार,

(७) सव्व पावप्पणासणो—सब पापों का, विघ्नों का नाश करने वाला है,

(८) मंगलाण च सव्वेसिं—दुनिया मे पाये जाने वाले सभी मंगलो मे,

(९) पढम हवइ मंगल—यह मंगल एक नंबर का मंगल है, उत्तम मंगल है।

पाठ चौथा

देव—ईश्वर

पेमचन्द—भाई रामलाल ! "अरिहत" कौन है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! अपनी आत्मा मे अथवा हर समारी जीव मे आठ तरह के बन्धन अथवा आठ प्रकार की रुकावटे रही हुई है। इन बन्धनो को जैन-धर्म मे "कर्म" कहते है। इस प्रकार इन आठ कर्मों मे से, जो महात्मा चार प्रकार के कर्म काट देता है, वही महात्मा "अरिहत" पद पा लेता है और ईश्वर बन जाता है।

पेमचन्द—भाई ! उन चार प्रकार की रुकावटो के अथवा बधनो के याने कर्मों के नाम मुझे बतलाओ।

रामलाल—"ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय" ये चार ही वे बन्धन है, जिनके टूट जाने से अपनी आत्मा भी "अरिहन्त" हो जाती है।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! "अरिहन्त-भगवान" के सबध मे मुझे और समझाओ।

रामलाल—अरिहन्त भगवान पूर्ण ज्ञानी और अनन्त ज्ञानी होते है। वे सर्वदर्शी अर्थात् सब कुछ देखने वाले होते है। वे मोह से रहित हो जाने के कारण "वीतरागी" कहलाते है। क्रोध-मान-कपट और

हवा को ही शरीर बनाकर रहने वाले जीव "वायु-काय" वाले जीव कहलाते है ।

अग्नि को अपना शरीर बनाकर रहने वाले जीव "तेउकाया वाले" जीव कहलाते हैं ।

हरी वनस्पति, घास, रुख-वृक्ष, बेलटी, ताजा फल आदि की शक्ल-सूरत बनाकर रहने वाले जीव "वनस्पति-काया" वाले जीव कहलाते है ।

प्रेमचन्द—भाई रामलाल ! क्या "इन पृथ्वीकाय, अपकाय वायुकाय, तेउकाय और वनस्पतिकाय" वाले जीवो के सिर्फ एक शरीर ही होता है ?

रामलाल—हाँ, भाई प्रेमचन्द ! इन पाचो तरह के जीवो के केवल एक शरीर ही होता है और इस शरीर से ही वे अपनी सारी जिन्दगानी का काम-काज चलाते है । ये "स्थावर-काय" नाम से मशहूर है ।

प्रेमचन्द—भाई रामलाल ! त्रस-जीव कौन है ?

रामलाल—भाई प्रेमचन्द ! जो जीव एक जगह से दूसरी जगह पर जा सकते है, आ सकते है, धूप छाया से जो अपना बचाव कर सकते है और जिनके मुख, नाक, कान अथवा दांत आदि होते है, वे "त्रस" जीव कहलाते है ।

पाठ बारहवाँ

जीव—त्रस
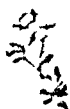
पेमचन्द—भाई रामलाल ! जैन-धर्म में त्रस जीव कितनी तरह के कहे गये हैं ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! जैन-धर्म में त्रस जीव चार तरह के कहे गये हैं। वे इस प्रकार हैं—(१) दो इन्द्रिय वाले, (२) तीन इन्द्रिय वाले (३) चार इन्द्रिय वाले और (४) पांच इन्द्रिय वाले।

पेमचन्द—भाई रामलाल "इन्द्रिय" शब्द का क्या मतलब है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द। यह अपना जीव जब तक इस शरीर में रहता है तब तक यह अपना काम "कान से, नाक से, आंख से, मुख से और शरीर" से चलाता है और इन से जानता है, देखता है, अनुभव करता है, सुनता है, चखता है, सूंघता है और गरम, ठंडा, कोमल कठोर आदि बातों का ज्ञान करता है; इसलिये ये "आंख, कान, नाक, मुख, शरीर" इन्द्रियाँ कहलाती हैं।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! दो इन्द्रियों वाले जीव किन को कहना ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! जिन जीवों के शरीर और मुख ही हो तथा आंख, कान, नाक नहीं हो, उन जीवों को "दो इन्द्रिय वाले" जीव कहते हैं। जैसे लट,

अलसिया, शख आदि प्रकार के जीव ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! तीन इन्द्रिय वाले जीव कौन कौन हैं।

रामलाल—भाई पेमचन्द ! जिन जीवो के "शरीर, मुख और नाक" होता है, वे जीव तीन इन्द्रियो वाले हैं। जैसे कीडी, मकोड़ी, जू, खटमल, इत्यादि ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! चार इन्द्रियो वाले जीवो का ज्ञान मुझे कराओ ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! जिन जीवो के "शरीर, मुख, नाक, और आंख" होती है उन जीवो को चार इन्द्रियो वाले जीव जानना। जैसे—मक्खी, मच्छर, भँवरा, टिड्डी इत्यादि ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! पांच इन्द्रियो वाले जीव कैसे होते है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! जिन जीवो के "शरीर, मुख, नाक, आंख और कान" होते है, उन जीवो को "पचेन्द्रिय जीव" कहते हैं। जैसे—मनुष्य, देवता, गाय, भैंस, ऊँट, गधा, कबूतर, चिड़िया, मोर, साप, मछली, मगर बकरा, भैसा इत्यादि प्रकार के जीव पचेन्द्रिय जीव हैं।

पाठ तेरहवाँ

अजीव

पेमचन्द—भाई रामलाल ! अजीव किसको कहते हैं ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! जिसमें सुख-दुख जानने की शक्ति नहीं होती है; जिसमें ज्ञान अथवा चेतना नहीं होती है और जो ज्ञान रहित होता है तथा जिसमें जन्मने की अथवा मरने की क्रिया नहीं होती है; वही अजीव है।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! अजीव के कितने भेद हैं ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! एक हिसाब से तो अजीव पदार्थ एक जैसे ही हैं और एक सरीखी हालत वाले ही हैं, परन्तु छोटे, बड़े, रंग-रूप, शकल-सूरत आदि कई बातों के लिहाज से उनमें भेदों का ख्याल किया जा सकता है।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! अजीव पदार्थों के सम्बन्ध में विशेष बतलाओ।

रामलाल—भाई पेमचन्द ! कई पदार्थ तो ऐसे हैं जो कान से सुनाई देते हैं और मशीनों के जरिये से पकड़े जा सकते हैं परन्तु हमारी आँखों से नहीं दिखाई देते हैं, जैसे कि शब्द आदि।

कुछ ऐसे हैं जो कि आँखों से दिखाई देते हैं परन्तु पकड़ में नहीं आते हैं; जैसे कि छाया, धूप, अन्धकार इत्यादि।

पाठ चौदहवाँ

पुण्य

पेमचन्द—भाई रामलाल ! जीव-आत्मा को सुख कैसे मिलता है ।

रामलाल—पेमचन्द ! जो जीव-आत्मा "पुण्य" के काम करता हैं; उसको इस जन्म मे भी सुख मिलता है और पर-लोक मे भी सुख मिलता है ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! "पुण्य" का क्या मतलब है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! पवित्र और अच्छे कामो को पुण्य कहते है ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! पवित्र और अच्छे काम कितने प्रकार के कहे गये है ।

रामलाल—भाई पेमचन्द ! यो तो पवित्र और अच्छे कामों की संख्या, तादाद बहुत-सी है परन्तु उनको जैन महात्माओ ने नव भेदो मे बांट दिया है ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! जैन महात्माओ का अपने ऊपर बहुत उपकार है; उनके फरमाये हुए नव प्रकार के पुण्य मुझे समझाओ ।

रामलाल—भाई पेमचन्द ! लो ध्यान से सुनो :—

(१) अन्न या और दूसरी खाने की वस्तुओ का दान देना "अन्नपुण्य" है ।

(२) पानी पिलाने की व्यवस्था करना, जल का इन्तजाम कर देना "पान-पुण्य" है।

(३) रहने के लिये स्थान देना, धर्म-शालाए आदि का इन्तजाम करना "लयन-पुण्य" है।

(४) सोने, बैठने आदि के लिये बिस्तर आदि का दान देना "शयन-पुण्य" है।

(५) पहिनने के लिये वस्त्रों का दान देना "वस्त्र-पुण्य" है।

(६) मन से अच्छे अच्छे विचार करना "मन-पुण्य" है।

(७) मीठी वाणी बोलना, शान्ति के वचन कहना "वचन-पुण्य" है।

(८) शरीर से, हाथ-पैरों से अच्छे काम करना "काय-पुण्य" है।

(९) अपने से अधिक गुणवान् आदमियों को नमस्कार करना, उनका विनय करना, "नमस्कार-पुण्य" है।

प्रेमचन्द—भाई रामलाल ! पुण्य में और धर्म में क्या फर्क है ?

रामलाल—भाई प्रेमचन्द ! पुण्य से संसार के सुख मिलते हैं और यह धर्म का भी सहायक होता है। पर धर्म से आत्मा ईश्वर की तरफ बढ़ती है और एक दिन ऐसा आता है कि जब धर्म के प्रताप से आत्मा शुद्ध-बुद्ध "ईश्वर" "अरिहन्त-सिद्ध" बन जाती है। यही बड़ा भारी पुण्य में और धर्म में फर्क है।

पाठ पन्द्रहवाँ

पाप

पेमचन्द—भाई रामलाल ! जीव-आत्मा इस ससार में दुख, गरीबी, रोग और क्लेश जैसी आपत्तियों मे क्यो फस जाता है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! जो जीव-आत्मा पाप करता है उसको उस पाप का फल भोगना ही पडता है।

पेमचन्द—भाई रामलाल पाप कितने प्रकार के कहे गये हैं ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! जैन-धर्म के महापुरुषो ने पाप के अठारह भेद फरमाये है। वे इस तरह से हैं—

(१) जीवो की हत्या करना, जीवो को दुख देना, पहला "प्राणातिपात" पाप है।

(२) झूठ बोलना, झूठी बातो मे शामिल होना; दूसरा "मृषावाद" पाप है।

(३) चोरी करना, चोरी के कामो मे मदद पहुँचाना; तीसरा "अदत्तादान" पाप है।

(४) परस्त्री का साथ करना, विषय वासना मे रमना, चौथा मैथुन" पाप है।

(५) धन को और अन्न आदि को बहुत ज्यादा इकट्ठे करके रखना और गरीबो का खयाल नहीं करना, पाचवां "परिग्रह" पाप है।

बातो मे नही लगकर पाप की बातों मे लगना, अठारहवाँ "मिथ्या-दर्शन-शल्य" पाप है ।"

पेमचन्द—भाई रामलाल ! जो समझदार मनुष्य इन अठारह पापो से दूर रहता है अथवा दूर रहने की कोशिश करता है, उसको क्या फायदा होता है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! ऐसा समझदार आदमी जल्दी ही अपनी आत्मा को पवित्र बनाकर "ईश्वर" जैसी पदवी पा लेता है ।

पाठ सोलहवाँ

धर्म

पेमचन्द—भाई रामलाल ! "धर्म-पालने" से क्या फायदा होता है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! "धर्म-पालने" से नया पाप बंधना बंद हो जाता है और पुराना पाप—बंधा हुआ भी छूट जाता है ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! किन बातों का पालन करने को "धर्म-पालना" कहते हैं ?

रामलाल—भाई प्रेमचन्द ! नीचे लिखी हुई बातों का पालन करने को "धर्म-पालना" कहा जाता है—

(१) सोच विचार कर दया-धर्म को पालने के प्रकार से सब काम करना "धर्म-पालना" है ।

(२) मन में दया-धर्म के विचार लाना, वचनों से--लोगों में शान्ति और मिलाप लाना "धर्म-पालना" है ।

(३) बुरे विचार नहीं आने देना बुरे शब्द नहीं बोलना और बुरे काम नहीं करना "धर्म-पालना" है ।

(४) बदला नहीं लेना और माफी देना, वाद नहीं करना, सत्य बोलना, जीव-दया का प्रचार करना; "धर्म-पालना" है ।

(५) वैराग्य की भावना लाना, साधु बनने के विचार करना, संसार की मोह-माया को झूठी समझना और पाप-पुण्य का ध्यान रखना "धर्म-पालना" है ।

(६) लिये हुए "व्रत" की पालना के समय में, अगर कोई संकट अथवा तकलीफ आवे तो ऐसे और के मौके पर मरने तक भी नहीं तोड़ना [illegible] "धर्म-पालना" है ।

(७) [illegible]

भोजन नही करने का व्रत लेना, एकासणा-उपवास करना, जैन-साधु-महात्मा के दर्शन करना, उनकी पवित्र वाणी सुनना, एक जगह पर बैठकर "नमोकर-महामत्र" की माला जपना, कोई पाप जानते अथवा अनजानते मे हो जाय तो उसके लिये खेद प्रकट करना, दड लेना, माफी मागना; आदि वातें "धर्म-पालना" कही जाती है।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! जैन-धर्म मे "आते हुए पाप के रुक जाने को" क्या कहते हैं।

रामलाल—भाई पेमचन्द ! अपने जीव-आत्मा मे पाप का आना जब रुक जाता है तो इसको "सवर" कहते हैं ?

पेमचन्द—भाई रामलाल ! जैन-धर्म मे आत्मा मे रहे हुए पुराने पाप-कर्मो के हट जाने को, दूर हो जाने को क्या कहते हैं ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! आत्मा मे रहे हुए पुराने पाप-कर्मों का दूर हो जाना "निर्जरा" कहलाती है।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! जब आत्मा इस प्रकार सवर धर्म का और निर्जरा धर्म का पालन करे तो क्या होता है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! जो मनुष्य अथवा जो आत्मा निश्चय के साथ "सवर धर्म" का और "निर्जरा-धर्म" का बराबर पालन करता रहता है तो ऐसी आत्मा

इस संसार के सबसे ऊपर एक विशेष तरह का स्थान है, वही पर मोक्ष की जगह है।

पेमचन्द—भाई रामलाल! मोक्ष मे जीव कैसा होता है?

रामलाल—भाई पेमचन्द! मोक्ष मे जीव के आकार प्रकार, शक्ल सूरत, शरीर, मन, आँख, नाक आदि ससार की हालते नही होती है, परन्तु वहाँ पर जीव सिर्फ "ज्ञान" की शक्ल मे ही रहता है। एक विशेष प्रकार की शक्ति के रूप मे "ईश्वर" बनकर, परमात्मा होकर रूप रहित हालत मे वहाँ पर विराजमान होता है।

पेमचन्द—भाई रामलाल! मोक्ष के जीव की उम्र-अ होती है?

रामलाल—भाई पेमचन्द! मोक्ष मे गये हुए जीव अ और अमर होते है। अजर का मतलब है—बुढापे रहित अर्थात् वहाँ पर न तो बुढापा है, न बाल-द है और न कुछ रोग-शोक-दु ख ही है। अमर का म लब है—हमेशा के लिये वहाँ पर रहना। एक ब मोक्ष मे जाने के बाद लौटने का कोई कारण न होता है। एक शब्द मे कहे तो वहाँ पर "अनन ज्ञान, अनन्त शक्ति, अनन्त आनद" होता है। मो मे गया हुआ जीव ही "भगवान" होता है। व परमात्मा होता है, वह ईश्वर होता है।

पेमचन्द—भाई रामलाल! क्या आपका जीवन भी एक दि मोक्ष मे जावेगा?

जाकर जैनधर्म को स्वीकार कर लो और अपना मनुष्य-जन्म सफल बना लो।

पाठ उन्नीसवाँ

श्रेष्ठ-पुरुष-तीर्थंकर

पेमचन्द—भाई रामलाल ! जैनधर्म की शुरुआत कब से हुई है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! इस ससार मे सदाकाल से जैन धर्म का प्रचार रहा है। लेकिन समय समय पर जैन धर्म का प्रचार करने के लिये इस जैनधर्म मे महा पुरुष उत्पन्न होते रहे है।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! ऐसे महापुरुषो को जैनधर्म मे क्या कहते है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! जो महापुरुष अपना राज-पाट माता-पिता, स्त्री-पुत्र और धन-दौलत तथा सुख-भोगो को छोड़कर जैन-साधु बन जाते है तथा तप कर अपने सभी पाप-कर्म खपा देते है और अनन्त ज्ञान अपनी आत्मा मे पैदा करके जो जैनधर्म की प्ररूपना करते है यानी जैनधर्म का स्वरूप बतलाते है, वे

पेमचन्द—भाई रामलाल ! इन तीर्थंकरो के दूसरे नाम भी है क्या ?

रामलाल—हाँ भाई पेमचन्द ! इनके दूसरे नाम भी हैं। भक्त लोग इन्हे "जिनेद्र, जिनराज, तीर्थपति, केवली भगवान" आदि नामो से श्रद्धा के साथ याद करते हैं।

-○ ○ ○-

पाठ बीसवाँ

भगवान महावीर स्वामी

पेमचन्द—भाई रामलाल ! इन चौबीस तीर्थंकरो मे से चौबीसवे तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का जन्म कहाँ पर और कब हुआ था ? यह बतलाओ।

रामलाल—भाई पेमचन्द ! इसी हिन्दुस्थान के बिहार-इलाके "क्षत्रिय-कुण्ड" नामक एक कस्बे मे आज से २५६ वर्ष पहले चैत सुदी तेरस के दिन भगवान महावीर स्वामी का जन्म हुआ था।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! उनके माता-पिता, भाई-बहन, पत्नी-पुत्री आदि के नाम बतलाओ।

रामलाल—भाई पेमचन्द ! उनके पिता का नाम श्री सिद्धार्थ था,

रहे। जानवरो की तकलीफे और मूर्ख मनुष्यो द्वारा दिये जाने वाले तरह-तरह के कष्ट-दु ख भी ये सहन करते रहे। बदले की भावना मन में जरा भी नही आने दी। इस प्रकार "क्रोध को, घमड को, कपट को और लालच को" तथा दूसरी सभी तरह की बुराइयो को इन्होने अपनी आत्मा मे से बिल्कुल जडमूल से खत्म कर दी और पूरी तरह से जब ये पवित्र हो गये तो इन्हे "ईश्वर का ज्ञान" पैदा हो गया और खुद ही "ईश्वर-जैसे" बन गये। तभी से ये "तीर्थंकर" कहलाने लगे। ऐसा ईश्वरपना पाने मे इन्हे पूरे बारह वर्ष लगे।

पेमचन्द—भाई रामलाल! जब भगवान महावीर स्वामी ईश्वर जैसे अर्थात् तीर्थंकर हो गये तब इन्होने क्या किया?

रामलाल—भाई पेमचन्द! तब इन्होने जैन-धर्म का स्वरूप बनाना एव धर्म-सदेश देना शुरू किया। अनेक मनुष्य और औरतें आ-आकर इनके व्याख्यान सुनने लगे। कुछ मनुष्यो ने तथा कुछ औरतो ने साधुपने का तथा साध्वीपने का नियम अगीकार किया। कुछ मनुष्यो ने और कुछ औरतो ने गृहस्थ-धर्म को स्वीकार किया जिससे ये "श्रावक और श्राविका" कहलाये। इस प्रकार धर्म का सदेश तीस वर्षों तक देते रहे।

पेमचन्द—भाई रामलाल! भगवान महावीर स्वामी की कुल उम्र कितनी थी? और बाद मे क्या हुआ?

की और तप की देखभाल करते है और जो तीर्थं
के मुख्य शिष्यो की गिनती मे आते है; उन्हे ग
धर कहते हैं ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! उन ग्यारह गणधरो के न
बताओ जो कि भगवान महावीर स्वामी के मुख्य शि
के रूप मे याद किये जाते हैं ।

रामलाल—भाई पेमचन्द ! उन ग्यारह गणधरो के नाम
प्रकार हैं —

(१) श्री इन्द्रभूतिजी, (२) श्री अग्निभूति
(३) श्री वायुभूतिजी, (४) श्री विगतभूति
(५) श्री सुधर्मास्वामीजी, (६) श्री मण्डिपुत्रजी
(७) श्री मौर्यपुत्रजी, (८) श्री अकपितजी
(९) श्री अचलभ्राताजी, (१०) श्री मेतारजजी
और (११) श्री प्रभासस्वामीजी ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! जैन-धर्म के महा आचार्य
१००८ श्री नानालाल जी महाराज साहब के मु
कमल मे श्री गौतमस्वामी जी का नाम भी सु
है तो ये महाराज कौन है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वा
के ग्यारह गणधरो मे से पहिले गणधर श्री इन्द्रभू
जी महाराज का गोत्र "गौतम" था, इसलिये इन
दूसरा नाम 'श्री गौतमस्वामी' भी है ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! महावीर-स्वामी के [illegible]

"आनुपूर्वी" कहलाता है ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! "आनुपूर्वी" मे क्या होता है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! आनुपूर्वी मे अरिहत भगवान को, सिद्ध भगवान को, आचार्यजी महाराज को, उपाध्यायजी महाराज को और साधुजी महाराज को नमस्कार किया जाता है ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! जो मनुष्य मजबूत अर्थात् अडिग विश्वास के साथ "आनुपूर्वी" के मुताबिक नवकार-महामत्र का जाप करता है तो उसको क्या फायदा होता है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! जो मनुष्य श्रद्धा के साथ, विश्वास के साथ हर रोज "आनुपूर्वी" के मुताबिक नवकार-महामत्र को जपने (गिनने) का नियम—वचन निभाता है, उसका सब पुराना पाप उसकी आत्मा से झड जाता है और वह दिन-ब-दिन पवित्र और धर्मात्मा बनता जाता है। इसलिये हे भाई पेमचन्द ! तुम भी आज से "आनुपूर्वी" गिनने का नियम ले लो ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! "आनुपूर्वी" जपने (गिनने) का क्या फायदा है ?

रामलाल—आनुपूर्वी के कोठो मे एक से पाँच तक के नम्बर दिये हुए होते है । इसका यह अर्थ-मतलब होता है कि—जहा पर (१) हो, वहा "नमो अरिहताण" बोलो। जहा पर (२) हो, वहा पर "नमो सिद्धाण" बोलो।

१	२	४	८	१६
२	१	४	८	१६
१	४	२	८	१६
४	१	२	८	१६
२	४	१	८	१६
४	२	१	८	१६

१	२	८	४	१६
२	१	८	४	१६
१	८	२	४	१६
८	१	२	४	१६
२	८	१	४	१६
८	२	१	४	१६

१	३	४	५	२
३	१	४	५	२
१	४	३	५	२
४	१	३	५	२
३	४	१	५	२
४	३	१	५	२

१	३	५	४	२
३	१	५	४	२
१	५	३	४	२
५	१	३	४	२
३	५	१	४	२
५	३	१	४	२

३	४	५	१	२
४	३	५	१	२
३	५	४	१	२
५	३	४	१	२
४	५	३	१	२
५	४	३	१	२

१	४	५	३	२
४	१	५	३	२
१	५	४	३	२
५	१	४	३	२
४	५	१	३	२
५	४	१	३	२

विशेष-भाग

पाठ पहिला

सामायिक व्रत

पेमचन्द—भाई रामलाल ! किस तरीके से बैठकर हमे रोज-व-रोज ईश्वर का भजन करना चाहिये ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! हमे रोज प्रात काल मे एक मुहूर्त तक याने ४८ मिनिट तक सामायिक-व्रत लेकर भगवान का ध्यान और भगवान की स्तुति करना चाहिये ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! सामायिक व्रत क्या है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! सामायिक-व्रत हमारे पापों को काटने वाला और ईश्वर के रूप मे हमारी आत्मा को बढ़ाने वाला एक बड़ा अच्छा व्रत है। एक "सामायिक" का समय ४८ मिनिट का होना है ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! मुझे सामायिक करने की सब विधि बताओ, मैं रोज-व-रोज सामायिक करना चाहता हूँ ।

लाग ढग से पहिनी हुई आगे की ओर धोती में ही टांग दी जाती है।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! इसके बाद यो सामायिक के लिये तैयारी कर लेने पर फिर क्या-क्या किया जाता है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ? धर्म-स्थानक में यदि महाराज साहब विराजमान हो तो उनकी सेवा मे और यदि महाराज साहब नही हों तो पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर मुंह करके तिक्खुत्तो का पहले आया हुआ पाठ मुंह से बोलते हुए दोनो हाथ जोड़कर, मस्तक पर इन जोड़े हुए हाथो को घुमाते हुए और नीचे जमीन पर दोनो घुटनो को टेक कर झुकते हुए तीनवार तिक्खुत्तो का पाठ बोलते हुए नमस्कार करके सामायिक-व्रत आचरने की आज्ञा भगवान से मांगे। इसके बाद आसन पर खड़ा होकर सबसे पहिले "णमोकार महामन्त्र" बोले।

—:o:—

पाठ दूसरा

रास्ते का पाप-निवारण का सूत्र

पेमचन्द—भाई रामलाल ! णमोकार-महामन्त्र बोलने के बाद क्या बोलना चाहिये ?

और इस धर्म-काम के लिये आते समय रास्ते मे कोई छोटे बड़े जीव-जन्तु मेरे पैरो से अथवा शरीर से कुचल गये हो, रगड़ गये हों, घायल हो गये हो, बेहोश हो गये हो, चोट खाकर अधमरे हो गये हो, अथवा जीवन से ही मर गये हो, तो हे नाथ ! हे स्वामी ! मैं पवित्र दिल से यह भावना प्रकट करता हूँ कि वह पाप मेरा झूठा हो । उस पाप के लिये मैं अपनी दिली नाराजगी प्रकट करता हूँ । इस प्रकार हे पेमचन्द भाई । "तस्स मिच्छामि दुक्कड" का मतलब भी यही है कि—वह पाप मेरी आत्मा के साथ नहीं लग कर अभी का अभी झड जाय ! हे दीनदयाल ! मैं उस पाप को बिल्कुल झूठा करने की भावना जाहिर करता हूँ । यही इन शब्दो का अर्थ है ।
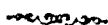
पाठ तीसरा

ध्यान करने का 'तस्स उत्तरी' पाठ

पेमचन्द—भाई साहब ! "इरिया वहिय" का पाठ बोलने के बाद क्या बोलना चाहिये ?

को अडिग रखूगा और जब तक नमोक्कार महामत्र नही पढ लूगा; तब तक इसी प्रकार से ध्यान मे लगा हुआ रहूँगा। हे नाथ ! हे स्वामी ! इस ध्यान मे मेरे ये आगार याने छूट हैं। इन छूटो के नाम इस प्रकार हैं:—

(१) ऊचा श्वास, (२) नीचा श्वास, (३) खांसी (४) छीक, (५) उबासी, (६) डकार, (७) नीचे की हवा सरना, (८) चक्कर (९) मूर्छा, बेहोशी, (१०) साधारण शरीर का हिलना, (११) कफ आदि का आना और (१२) आंखो की साधारण नजर का इधर उधर फिरना, इन छूटो के सिवाय मैं एक चित्त से ध्यान मे रहूगा और अब मैं इस ध्यान के समय मे अपने शरीर, मन और वचन के पापो को दूर करता हू—अलग करता हूँ।"

प्रेमचन्द—भाई रामलाल ! "इरिया वहिय" का पाठ बोल कर बाद मे हम "तस्स उत्तरी करणेण" का पाठ बोलना चाहिये, यह तो मैं समझ गया। अब यह बतलाओ कि ध्यान कैसे करना और ध्यान मे क्या-क्या बोलना चाहिये ?

रामलाल—भाई प्रेमचन्द ! ध्यान खड़े खड़े भी किया जाता है और बैठे बैठे भी किया जाता है। यदि खड़े खड़े ही करना हो तो सीधे खड़े रहना चाहिये। दोनो हाथ लटकते हुए, सीधे लगे हुए शरीर से मिलाकर

परन्तु अव यह कहो कि "ध्यान पारने" के वाद क्या कहना चाहिये ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! ध्यान करने वाला ध्यान करके यह कहे कि—"हे भगवान ! इस "ध्यान-काम" मे मेरा मन वचन और काया डिगी हो तो "तस्स मिच्छामि दुक्कड" इस ध्यान-काम मे "उत्तम-ध्यान, धर्म-ध्यान" नही ध्याया हो तथा "वुरा ध्यान, पाप-ध्यान" ध्याया हो तो हे नाथ ! इसके लिये मै "तस्स मिच्छामि दुक्कड" देता हूँ ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! आपके कहने के अनुसार ध्यान मे लगने वाले पापो के लिये "तस्स मिच्छामि दुक्कड" वोलने के वाद मे कौनसा पाठ वोलना चाहिये ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! "ध्यान" को पवित्र वनाने के वाद लोगस्स उज्जोयगरे" का पाठ वोला जाता है । वह पाठ इस प्रकार है—

मूल—लोगस्स उज्जोयगरे, धम्म-तित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥
उसभमजियं च वंदे, संभव मभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च ।
विमल मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥

और सत्कार करने के योग्य है ।

हे अनन्त गुणो के भंडार ! आपकी महरबानी के प्रताप से मुझे भी आप जैसी ही "ऋद्धि और सिद्धि" प्राप्त हो। आप जैसी "समाधि" मुझे भी मिले । आपकी महिमा कहाँ तक गाई जाय ? हे घट घट के अन्तर्यामी ! आप चन्द्रमा से भी अनन्त गुणा अधिक निर्मल हैं। आप सूरज से भी अनन्त गुणा अधिक प्रकाश वाले ज्ञान के धणी है । आपके चारित्र की अनन्त गहराई की तुलना समुद्र से नही की जा सकती है।

पापियो का उद्धार करने वाले हे तीन लोको के नाथ ! अन्त मे मेरी यही एक प्रार्थना है कि आप "सिद्ध" हैं इसलिये मुझे भी आप जैसा ही "सिद्ध" बना दे ।

पाठ पाँचवाँ

सामायिक व्रत लेने का पाठ

प्रेमचन्द—भाई रामलाल ! चौवीस तीर्थंकर की स्तुति का पाठ 'लोगस्स उज्जोयगरे" बोलने के बाद क्या बोलना चाहिये ?

रामलाल—भाई प्रेमचन्द ! ऊपर लिखे अनुसार सब पाठ बोल

रामलाल—भाई पेमचन्द ! ऊपर दिये हुए पाठ मे दिखाई पड़ने वाले चिह्न का यह मतलब है कि यहाँ पर "एक सामायिक, दो सामायिक अथवा जितनी सामायिक" लेना हो उतनी "सख्या" बोलते हुए आगे का पाठ बोले ।

भाई पेमचन्द ! इस पाठ मे सामायिक करने वाले की यह भावना जाहिर की गई है कि—"हे पूज्य ! मैं सामायिक व्रत लेता हूँ और जितनी सामायिकें पच्चक्ख रहा हूँ उतने मुहूर्त तक (प्रत्येक सामायिक के अनुसार ४८-४८ अड़तालीस-अडतालीस मिनट तक) सभी प्रकार के मन-वचन-काय सबधी पापो का त्याग करता हूँ—इन्हे छोडता हूँ । हे नाथ ! इतने समय तक मन, वचन और काया से न तो खुद पाप करूगा और न दूसरो से पाप कराऊगा । इस प्रकार के पच्चक्खाण लेता हुआ हे पूज्य ! मैं अपने पाप के लिये खेद प्रकट करता हूँ, मेरी आत्मा की साक्षी से उस पाप की निंदा करता हूँ और इस प्रकार अपनी आत्मा को पाप से हटाकर धर्म-ध्यान मे लगाता हूँ ।" यही अर्थ "करेमि भते" नाम वाले पाठ का है ।

पाठ छट्ठा

अरिहंत-सिद्ध की स्तुति का पाठ

णमोत्थुण ! अरिहंताण, भगवंताणं, आइगराण, तित्थयराण, सय सबुद्धाण, परिसुत्तमाण पुरिससीहाण, पुरिसवर पुडरियाण, पुरिसवर गधहत्थीण, लोगुत्तमाण, लोगनाहाण, लोगहियाण, लोग पईवाण, लोगपज्जोय-गराण, अभय दयाण चक्खुदयाण, मग्गदयाण सरण दयाण, जीव दयाण, वोहि दयाण, धम्म दयाण, धम्म देसयाणं धम्म नायगाण, धम्म सारहीण, धम्म वर-चाउरत-चक्क वट्टीण, दीव-ताण-शरण-गइ-पइट्ठाण, अप्पडिहय-वर नाण दसण धराण, वियट्ट छउ-माण, जिणाण, जावयाण, तिण्णाण, तारयाण, बुद्धाण, बोह-याण, मुत्ताणं, मोयगाण, सव्वन्नुण सव्वदरिसीण सिव-मयल-मरुय-मणत-मक्खय-मव्वबाह-मपुणरावित्ति-सिद्धि गइ नामधेय ठाण सपत्ताण (× ठाण सपाविउ कामाण) णमो जिणाण जिय भयाण ॥

पेमचन्द—भाई रामलाल ! यह पाठ सुनने मे और बोलने में बहुत अच्छा लगता है, इसका अर्थ मुझे बतलाओ।

रामलाल—भाई पेमचन्द ! इस पाठ मे सिद्ध भगवान के और अरिहन्त भगवान के गुण-ग्राम किये गये है और भग-वान की स्तुति की गई है। इसमे भक्त भगवान के गुणों को कहता हुआ प्रार्थना करता है कि—

हे दीनानाथ ! आपको मेरा नमस्कार हो। आप अरिहन्त है, आप धर्म को प्रगट करने वाले है; उसका प्रारम्भ करने वाले है, आप धर्म रूप तीर्थ की स्थापना

हे दया के समुद्र ! आप "सर्वज्ञ" अर्थात् सब कुछ जानने वाले है; आप "सर्व-दर्शी" अर्थात् घट घट के मन की बाते जानने वाले हैं, आप "शिव" रूप अर्थात् कल्याणकारी हैं, आप "अचल" याने अपने पद से नही गिरने वाले है, आप रोग रहित हैं, अन्त रहित हैं, अक्षय हैं, बाधाओ से रहित हैं और ऐसे "मोक्ष" रूप स्थान को प्राप्त हो गये हैं जहां से कि नीचे आने का कोई कारण बाकी नही रहा है, ऐसे मोक्ष मे विराजमान "अनन्त अनन्त सिद्धो" को मेरा नमस्कार हो; तथा उन "अनन्त-अनन्त अरिहतो" को भी मेरा नमस्कार हो जो कि मोक्ष मे जाने के लिये तैयार हो गये हैं ।

इस प्रकार से हे पेमचन्द भाई ! इस पाठ मे "सिद्धो की तथा अरिहतो की" स्तुति की गई है ।

पाठ सातवाँ

सामायिक में क्या करना चाहिये ?

पेमचन्द—भाई नमस्कार ! मेहरवानी करके अब यह बताओ कि इस प्रकार से सामायिक लेकर सामायिक में क्या

रामलाल—भाई पेमचन्द ! सामायिक करने से हमारे पिछले सब पाप कट कर झड जाते है और नये पाप-कर्म भी बवते हुए रुक जाते हैं और इस प्रकार से हमारी आत्मा जल्दी ही संसार के जन्म-मरण के चक्कर से और दु खो से छुटकारा पाकर "मोक्ष"मे जाने की ताकत पा लेती है। यो सामायिक करने से हमारी आत्मा एक दिन "अरिहत" भगवान बन कर "सिद्ध-भगवान" बन जाती है । इतना बडा भारी फायदा रोज विना लांगा किये सामायिक करने से होता है ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! प्रत्येक दिन मैं सुवह मे एक सामायिक अवश्य करने का नियम लेता हूँ । तुम्हारी "सामायिक करने की बातो" का मुझ पर अच्छा असर हुआ है इस के लिये मैं तुम्हारा आभार मानता हूँ।

—○—

पाठ आठवाँ

सामायिक पारने की विधि

पेमचन्द—भाई रामलाल ! एक-एक सामायिक का समय अड़तालीस (४८) मिनिट का है; तो फिर अड़तालीस

विधि कर लेने के बाद अगले पाठ मे बताई जाने वाली विधि के अनुसार सामायिक पार ले ।

पाठ नववाँ

सामायिक पारने का पाठ

पेमचन्द—भाई रामलाल ! सामायिक पारने का पाठ मुझे बतलाने की कृपा करो ।

रामलाल—भाई पेमचन्द ! सामायिक पारने का पाठ इस प्रकार से है—

एयस्स नवमस्स सामाइय वयस्स पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा ते आलोऊ, मण दुप्पणिहाणे, वय दुप्पणिहाणे, काय दुप्पणिहाणे सामाइयस्स सइ अकरणयाए, सामाइयस्स अण वट्ठियस्स करणयाए तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

सामाइय सम्म काएण न फासिय, न पालिय, न सोहिय, न तीरिय, न किट्टिय न आराहिय, आणाए अणुपालिय न भवइ, तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

सामायिक में दस मन के, दस वचन के और बारह

रामलाल—भाई पेमचन्द ! उस पाठ मे यह बतलाया गया है कि–मैंने जो सामायिक व्रत लिया है उसमे मेरा मन वचन और काया धर्मध्यान मे नही लगकर दूसरे ध्यान मे लग गया हो तथा सामायिक का आचरण भली प्रकार से नही किया हो अथवा सामायिक को वेंगारी की तरह पूर्ण की हो तो हे भगवान ! मै आपकी साक्षी से इस पाप के लिये "तस्स मिच्छामि दुक्कड" देता हूँ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! ऊपर आये हुए "सज्ञा" शब्द का क्या अर्थ है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! यहाँ पर "सज्ञा" शब्द का अर्थ "इच्छा करना", "भावना-भाना" "लालायित होना" ऐसा है।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! "अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार और अनाचार" का क्या मतलब है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! (१) मन में बुरे विचार लाना, पाप के विचार लाना "अतिक्रम" है। (२) पाप का सामान जुटाना और उस सामान मे खुश होना "व्यतिक्रम" है। (३) पाप मे लग जाना, पाप को शुरू कर देना "अतिचार" है और (४) बहुत बुरी तरह से पाप मे फस जाना, लगातार घोर पाप करते रहना ही "अनाचार" है।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! मैं आपका बहुत आभारी हूँ,

कुछ उपयोगी नारे

१. जैन-धर्म की जय हो ।

२ दया-धर्म की जय हो ।

३ जैन-धर्म का प्रचार हो ।

४ श्री महावीर स्वामी की जय हो ।

५. आचार्य गुरुदेव पूज्य श्री नानालालजी महाराज जय हो ।

६ गुरु ! आपके मंत्र को घर घर पहुँचावेंगे ।

७ आंधी हो या तूफान हो, आगे ही बढ़ते जावेंगे ।

८ छोटा बड़ा करे पुकार, जैन-धर्म की जय-जयकार ।

९ धर्मनाथ भगवान की जय हो ।

१०. शान्तिनाथ भगवान की जय हो ।

११. नमोक्कार महामंत्र की जय हो ।

१२ अहिंसा परमो धर्म की जय हो ।

मुद्रक —

जैन आर्ट प्रेस, रांगड़ी मोहल्ला, बीकानेर ।

([illegible] द्वारा संचालित)

में तीनो कालो की घटनाए साक्षात् और स्पष्ट रूप से झलकती रहती हैं। अपन भी एक दिन ऐसे ही "सिद्ध-भगवान" बन सकते हैं।

पाठ पाँचवाँ

गुरु-परिचय

पेमचन्द—भाई रामलाल ! गुरु कौन हैं ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! "आचार्य, उपाध्याय और साधु" ये तीनो गुरु कहलाते है।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! इनकी क्या पहिचान है।

रामलाल—इनके मुख पर एक सफेद कपड़े की मुखपत्ती बंधी हुई होती है। ये छोटे-बड़े सूक्ष्म जीवो की दया पालने के लिये अपने पास ऊन का बना हुआ एक "ओघा और पूंजणी" रखते हैं। बर्तनो के नाम पर इनके पास केवल "लकड़ी के ही पात्र" होते हैं। वे तीन चार सफेद कपड़े ही पहिनने के लिये, ओढ़ने के लिये रखते हैं और रुपया पैसा, सोना, चांदी, धातु आदि कुछ भी नहीं रखते हैं, जहां भी जाना होना

है वहाँ पर पैदल ही जाते है, नगे सिर तथा नगे पाँव ही रहते हैं।

पेमचन्द—भाई रामलाल! ऐसे महात्माओं मे और क्या-क्या गुण होते हैं?

रामलाल—भाई पेमचन्द! इनमें अनेक गुण होते हैं और अनेक तरह के महाव्रत पालते हैं, परन्तु उनमे भी "पाँच महाव्रत और छट्ठा रात्रि-भोजन-निषेध" व्रत की प्रधानता होती है।

पेमचन्द—भाई रामलाल! इन पाँच महाव्रत और रात्रि-भोजन-निषेध का स्वरूप मुझे समझाओ।

रामलाल—भाई पेमचन्द! लो! सुनो.—

(१) मन वचन और काया से ये साधुजी महाराज न तो किसी जीव की हिंसा करते हैं और न करते हुए को ही भला समझते हैं; यही इनका पहिला "अहिंसा महाव्रत" है।

(२) मन, वचन और काया से ये गुरुजी न झूठ बोलते हैं, न झूठ बुलाते हैं और न झूठ बोलते हुए को अच्छा समझते हैं; यही दूसरा "सत्य-महाव्रत" इनका होता है।

(३) मन, वचन और काया से ये जैन-साधु न चोरी करते हैं, न चोरी कराते हैं और न चोरी करते हुए को ही अच्छा समझते हैं, यही इनका तीसरा "अचौर्य महाव्रत" है।

(४) मन, वचन और काया से ये जैन-महात्मा "स्त्री-प्रसग" से और दूसरे सभी प्रकार के "मैथुन" रूप पाप से दूर ही रहते है। ऐसा पाप न तो ये खुद ही करते है और न दूसरो से ही करवाते हैं तथा न ऐसा पाप करते हुए को अच्छा ही समझते हैं, यही महाव्रत "चौथा ब्रह्मचर्य व्रत" इनका होता है।

(५) रुपया, पैसा, कोडी, मकान, सोना, चादी, पीतल, घोडा, गाय, खेत, नौकर-चाकर टिकिट, लिफाफे, नोट आदि सभी प्रकार के परिग्रह से और परिग्रह की ममता से मन, वचन और काया करके ये रहित होते है इसलिये इनको "निर्ग्रन्थ" भी कहते है और यही महाव्रत "निष्परिग्रह-महाव्रत" इनका होता है।

(६) ये महापुरुष "रात्रि मे सूर्यास्त हो जाने के बाद" न तो कुछ खाते है और न कुछ पीते है। जल भी और आहार का कुछ अंश भी अपने पास नही रखते है। यही इनका छट्ठा "रात्रि-भोजन-निषेध" महाव्रत है।

प्रेमचन्द—भाई रामलाल! यदि ऐसी कठोर क्रियाएं ये पालते है तो दर असल मे ये "महान् उत्तम पुरुष" है और "महान् त्यागी महात्मा" है तथा सचमुच मे हमारे "गुरु" बनाने के लायक है। धन्य है उन महात्माओं को। धन्य है उनके माता-पिता को। मैं इनको बार-बार वंदना करता हूँ।

पाठ छट्ठा

गुरु-महिमा

पेमचन्द—भाई रामलाल ! इन गुरु महात्माओ की कुछ महिमा और बतलाओ ।

रामलाल—भाई पेमचन्द ! लो ! सुनो —

ये महात्मा "पृथ्वी मे, पानी मे, अग्नि मे, वायु मे और वनस्पति मे "जीव" मानते है । इन्हे ये स्थावर काय जीव कहते है और चलते हुए, फिरते हुए जीवो को "त्रस" कहते है। इन "स्थावर और त्रस" जीवो की मन, वचन और काया से रक्षा करते हैं और इनकी रक्षा के लिये ही "ओघा-पूजणी" रखते हैं । इसलिये ये "दया के बादशाह" कहलाते है । ससार समुद्र की ये जहाज है ।

ताजा मिट्टी पर ये पैर नही रखते है और न उसको छूते हैं । ताजा पानी (सचित्त) पीना तो दूर रहा परन्तु उसको छूना भी पाप ही समझते है, आग से न ताप का ही काम लेते हैं और न इसका दूसरी प्रकार से उपयोग ही करते हैं। दीपक नही जलाते और न बिजली-बेटरी आदि से चलने वाले दीपक, रेडियो, हीटर, लाउडस्पीकर आदि यत्रो का ही ये उपयोग करते हैं। हवा के लिये पखा आदि भी नही

करते है और इसीलिये मुख पर मुख-पत्ती लगाते हैं। पैरो मे कभी भी जूता, मोजा आदि भी नही पहनते है। वनस्पति अर्थात् हरे शाक, सब्जी, फल-फूल-पत्ते आदि को काम मे नही लाते हैं। यहाँ तक कि इनको छूते तक नही। यदि कोई वनस्पति को, सचित्त (ताजा) जल को, आग को अथवा ताजा (सचित्त) मिट्टी को छूकर अथवा फूक मार कर भिक्षा दे तो उसे ये अशुद्ध याने असूझता जानकर नही लेते हैं। इतनी कठोर क्रियाए इन महापुरुषो की होती हैं।

पेमचन्द—भाई रामलाल! धन्य है, इन महात्मा पुरुषो को। इसके सम्बन्ध मे कुछ और बतलाओ।

रामलाल—भाई पेमचन्द! रात्रि के समय मे इनके ठहरने के स्थान पर कोई भी छोटी बडी लडकी अथवा स्त्री नही आ सकती है तथा दिन मे भी पुरुष की हाजरी मे केवल थोडे से समय के लिये ही "ज्ञान-ध्यान धार्मिक क्रिया" के लिये ही स्त्री को—छोटी बडी को—आने की इजाजत होती है। वह भी दूर ही बैठती है और इनको छू नही सकती है। ऐसे ये जैन के साधु होते है।

सूरज के अस्त हो जाने के बाद मे सूरज के उगने तक ये अपना स्थान छोडकर चलना-फिरना अर्थात् "विहार" नही करते हैं। ठहरने के स्थान पर ही अथवा शारीरिक काम से उसी स्थान पर चलने-फिरने

की आवश्कता पडे तो "ओघा-पूजणी" से पहले भूमि को पूजकर फिर पैर रखते है। गाडी, घोडा, साईकल, रेल, मोटर, आदि किसी भी प्रकार की सवारी पर न तो खुद बैठ कर ही जाते आते हैं और न अपना सामान ही उनपर लाद कर चलते हैं। यहाँ तक कि अपना सामान भी किसी दूसरे आदमी से नही उठवाते हैं। इनका कोई मकान, मन्दिर अथवा मठ नही होता है। दुनिया भर की छोटी बडी स्त्रियो को अपनी बहिन अथवा माता ही समझते हैं। गाजा, भाग, अफीम, चरस, तमाखू, शराब आदि किसी भी प्रकार की नशीली वस्तु का ये सेवन नही करते है। ऐसे ये सच्चे गुरु है।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! मैं तो ऐसे महापुरुष को ही अपना गुरु बनाना चाहता हूँ।

पाठ सातवाँ

गुरु-समझ

पेमचन्द—भाई रामलाल ! ऐसे "जैन के बादशाह, और दया-धर्म के अवतार" का नाम बताओ; जिनको मैं अपना

गुरु वना सकू ।

रामलाल—भाई पेमचन्द ! ऐसे ही धर्म की जहाज के समान, दया के सागर, निर्लोभी, महात्मा, महापुरुष, महा- त्यागी, महावैरागी और महान् चारित्र-सपन्न पूज्यराज श्री श्री १००८ श्री वालब्रह्मचारी, जैन-आचार्य श्री नानालाल जी महाराज साहव को अपना गुरु वना लो।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! ये महात्मा, तरण-तारण की जहाज समान आजकल कहाँ विराजते है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! ये महात्मा आजकल मालवा क्षेत्र मे एक गाम से दूसरे गाम मे विचरते हुए, धर्म-तत्त्व का प्रचार करते हुए और जनता को धर्म-वोध देते हुए ज्ञान और चारित्र का प्रकाश फैला रहे है।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! इन निस्स्वार्थ, त्यागी महात्मा के सवध मे कुछ और वतलाओ ।

रामलाल—भाई पेमचन्द ! इनके गुरु का नाम "पूज्यराज श्री १००८ श्री गणेशलालजी महाराज" था। वे परम प्रतापी, परम तेजस्वी, परम ज्ञानी, परम ध्यानी और परम चारित्र के धनी थे, उन्ही के स्वर्गवास होने पर ये उनके पट्टधर के रूप मे जैन धर्म के आचार्य वनाये गये है। इनमे ज्ञान, ध्यान और चारित्र की प्रधानता है, इसलिये ये "आचार्य" के पद पर स्थापित किये गये है। इन्हे गुणो की खान समझो। इनकी शरण मे आने से यह मनुष्य-जन्म तो सफल

हो ही जायगा परन्तु आने वाले जन्म भी सफल हो जायेंगे, इसलिये चलो आज ही इनके दर्शन करके पवित्र बनो। वाणी सुन करके जैन-धर्मी बनो और अपने को धन्य-धन्य करो।

पेमचन्द—इनका उपदेश किस प्रकार का होता है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! ये किसी दूसरे धर्म की निन्दा नही करते है और जैन-धर्म का ही खोल खोल कर बखाण करते हैं; क्योंकि जैन-धर्म गुण-रत्नो की खान है।

पाठ आठवाँ

गुरु-उपदेश

पेमचन्द—भाई रामलाल ! इनके उपदेश की कुछ खास-खास बातें बतलाओ।

रामलाल—ये फरमाते है कि सात कुव्यसन छोड़ने से आत्मा निर्मल हो जाती है, मनुष्य आदर्श और पवित्र बन जाता है।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! वे सात कुव्यसन कौन-कौन से है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! वे सात कुव्यसन इस प्रकार हैं —

(१) शिकार खेलना–जीव हिंसा करना पाप है ।

(२) जुआ खेलना–सट्टा खेलना पाप है ।

(३) चोरी करना–मालिक की आज्ञा के विना किसी
चीज को लेना, धोखा देना पाप है ।

(४) मास खाना–अभक्ष्य खाना पाप है ।

(५) मदिरा-शराब पीना–नशा करना पाप है ।

(६) परस्त्री गमन करना–लम्पट बनना पाप है ।

(७) वेश्या-गमन करना–बाजारु औरत के यहाँ जाना
पाप है ।

इन सात प्रकार के व्यसनो से दूर रहने का ही उपदेश ये महात्मा फरमाया करते है । ये फरमाते है कि:—

(१) मास खाने वाला दया रहित और क्रूर बन
जाता है। ऐसा आदमी पाप को पाप नही मानने
लगता है, मास खाने से बुद्धि, शरीर, मन
और जिंदगी ही खराब हो जाती है ।
मास खाने वाले प्राणी की शरीर रचना कु
और ही होती है । उनके नाखून, दात, दा
जिह्वा की रचना आदि सारे शरीर का ढांच
ही कुछ और ही प्रकार का होता है; जब
मनुष्य के शरीर का ढांचा ऐसा है कि जिस
यह मालूम होता है कि मनुष्य को तो ना
फल दूध आदि जैसे पदार्थ के अलावा मा
आदि अभक्ष्य चीजों को नहीं खाना चाहिये

लिखा पाठ बोलते हुए इन गुरु-महात्मा की सेवा मे हाजिर होना चाहिये ।

गुरु-वन्दना का पाठ इस प्रकार है'—

"तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेमि, वदामि, नमंसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाण, मगल, देवय, चेइय पज्जुवासामि, मत्थएण वदामि ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! इसका हिन्दी अर्थ बोलो ।

रामलाल—भाई पेमचन्द ! इसका हिन्दी अर्थ इस प्रकार है —

हे गुरुजी महाराज ! मैं तीन बार "हाथ जोडकर और माथे पर जोडे हुए हाथ श्रद्धा के साथ घुमाता हुआ" आपको वदना करता हूँ । आपको नमस्कार करता हूँ । आपका सत्कार करता हूँ । आपका सन्मान-भक्ति करता हूँ । हे नाथ ! आप मेरे लिये कल्याण करने वाले है । हे स्वामी ! आप मेरे मगलकारी है—सभी प्रकार के कष्टो को और विघ्नों को आप दूर करने वाले हैं । आप मेरे लिये देव-स्वरूप हैं, पूजनीय हैं । आप ज्ञान और चरित्र के भंडार है । मैं आपकी मन, वचन और काया से सेवा करना चाहता हू और हे स्वामी-नाथ ! मै अपना मस्तक झुकाकर आपको तीन बार और बार बार वदना करता हूँ—नमस्कार करता हूँ ।

पेमचन्द—क्या यह वदना-पाठ केवल गुरु-महाराज के लिये ही है अथवा किसी और के लिये भी है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! यह वंदना पाठ "अरिहन्त-भगवान, सिद्ध भगवान, गुरु-महाराज और साधुजी और साध्वियाँ महाराज" इन महापुरुषों की वंदना के लिये है, और किसी के लिये नहीं है ।
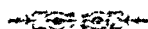
पाठ दशवाँ

मंगल और शरण

पेमचन्द—भाई रामलाल ! इस संसार-समुद्र में जीव के लिये कौन कौन मंगल रूप हैं ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! इस संसार समुद्र में जीव के लिये चार मंगल हैं; जो जीव इन मंगलों पर अविचल भक्ति रखता है; वह खुद ही इन मंगल रूपों को पा लेता है । वे मंगल रूप इस प्रकार हैं—

(१) अरिहन्त भगवान मंगल रूप हैं ।

(२) सिद्ध भगवान मंगल रूप हैं ।

(३) साधुजी महाराज-गुरुजी महाराज मंगल रूप हैं ।

(४) अरिहन्त भगवान का फरमाया हुआ दया-धर्म मंगल रूप है ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! इस ससार समुद्र मे जीव के लिये कौन कौन शरण रूप है ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! इस समार-समुद्र में जीव के लिये चार शरणा हैं ! जो जीव इन चार शरणो को अपना आधार बना लेता है, वह इस ससार-समुद्र से पार होकर भगवान की परम ज्योति जैसा बन जाता है । हम सभी को इन चार शरणो में जाना चाहिये । वे चार शरणा इस प्रकार हैं —

(१) अरिहत भगवान हमारे लिये शरण रूप हैं ।

(२) सिद्ध भगवान हमारे लिये शरण रूप हैं ।

(३) साधुजी-महाराज-गुरुजी महाराज हमारे लिये शरण रूप हैं ।

(४) अरिहत भगवान का फरमाया हुआ दया-धर्म ही हमारे लिये शरण रूप है ।

रामलाल—भाई पेमचन्द ! बोलो— "मेरे लिये आज से ये ही चार मगल रूप हैं और आज से ही मैं इन चारो शरणो की सेवा ग्रहण करता हूँ ।"

पेमचन्द—भाई रामलाल मैं आज से ही इन चारो मंगलो को मन, वचन और काया से स्वीकार करता हूँ तथा आज से ही इन चारो शरणो को मन, वचन और काया से अपना जीवन-आधार बनाता हूँ ।

पाठ ग्यारहवाँ

जीव-स्थावर

पेमचन्द—भाई रामलाल ! जीव किसको कहते हैं ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! जिसमे सुख-दुख को जानने की शक्ति होती है और जिसमे चेतना अथवा ज्ञान होता है तथा जिसमे जान होती है; उसको "जीव-आत्मा" जानना चाहिये ।

पेमचन्द—जीव कितने प्रकार के होते हैं ?

रामलाल—भाई पेमचन्द ! जीव आम तौर पर दो तरह के होते हैं; जिनको "स्थावर और त्रस" कहते हैं ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! स्थावर किस को जानना ?

रामलाल—जो जीव चल फिर नहीं सकता है और एक ही जगह पर ठहरा रहता है तथा जिनके केवल शरीर ही होता है याने कान, आँख, नाक, मुँह नहीं होते हैं; वह जीव "स्थावर" कहलाता है ।

पेमचन्द—भाई रामलाल ! ऐसे जीवो के नाम बतलाओ ।

रामलाल—भाई पेमचन्द ! ऐसे स्थावर नाम वाले जीव पाँच प्रकार के बतलाये हैं । इनके नाम इस प्रकार हैं—
पहला पृथ्वी-मिट्टी-खान के रूप मे रहे हुए जीव "पृथ्वीकाया के जीव हैं । जल को शरीर बनाकर रहे हुए जीव "अपकाया" वाले जीव कहलाते हैं ।